कोविड–19 का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

प्रो. सुमन पामेचा

कोविड महामारी का प्रकोप 21वीं शताब्दी की सबसे महत्वपूर्ण घटना है। यह महामारी आज से 100 वर्ष पहले प्रथम विश्वयुद्ध के बाद 1918 में आई स्पेनिश फ्लू नामक महामारी के बाद अब तक की सबसे बड़ी महामारी है। इस महामारी से उस समय विश्व में 5 करोड़ लोगों की जान चली गई थी। अकेले भारत में ही करीब 1.8 करोड़ लोग स्पेनिश फ्लू से मारे गये थे। इसका परिणाम यह हुआ था कि देशों में राष्ट्रीय स्तर पर स्वास्थ्य सेवाओं की स्थापना की गई तथा स्वास्थ्य की देखभाल सरकार का एक महत्वपूर्ण दायित्व बन गया। अब जबकि विश्व में तमाम तकनीकी विकास हो चुका है, कई बीमारियों का इलाज खोजा जा चुका है और विश्व में स्वास्थ्य सेवाओं का फैलाव भी व्यापक है तो भी कोविड महामारी ने विश्व के तमाम विकसित देशों जैसे अमेरिका, इटली, ब्रिटेन व फ्रांस आदि देशों में भंयकर तबाही मचाई है।

कोविड महामारी की शुरूआत आधिकारिक तौर पर 9 जनवरी, 2020 को चीन के वुहान शहर से हुई थी। धीरे–धीरे इस महामारी ने विश्व के लगभग सभी देशों को अपनी चपेट में ले लिया। WHO ने 12 मार्च, 2020 को इसे वैश्विक महामारी घोषित कर दिया। इसने विश्व के 252 देशों/क्षेत्रों को अपनी चपेट में ले लिया। कोविड–19 संक्रमण ने विश्व के विकसित देशों ळ.8 ;यू. एस. ए, यू. के.) (USA,UK), फ्रांस, जर्मनी, इटली, कनाडा, रूस, जापान) की सर्वाधिक उन्नत समझी जाने वाली स्वास्थ्य एवं चिकित्सा प्रणाली की अक्षमता एवं असफलता उजागर कर दी। ळ.8 देशों में केवल जापान ही एकमात्र ऐसा देश है जहां कोविड–19 की घातकता सबसे कम है। पूरे विश्व में कोविड–19 संक्रमण को फैलाने वाला देश चीन भले ही यह दावा क्यों न कर रहा हो कि उसने इस संक्रमण को लगभग नियंत्रित कर लिया है लेकिन लौह आवरण में कार्य करने वाले चीनी प्रशासन के दावों का विश्वास नहीं किया जा सकता है।

वर्तमान शताब्दी की इस अप्रत्याशित व सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना ने विश्व की अर्थव्यवस्था, राजनीति, विज्ञान व तकनीक, सामाजिक व्यवस्था आदि सभी पर व्यापक प्रभाव डाला है। निश्चित रूप से इस महामारी के आने के बाद विश्व वो नहीं होगा जो महामारी के पहले था।

vkfFkd izHkko

चूंकि शुरूआत में इस बीमारी का कोई प्रभावी इलाज व टीका नहीं था तथा यह महामारी व्यक्तियों में आपसी संपर्क से फैलती है। अतः सभी देशों ने मास्क, सामाजिक दूरी बनाने तथा लॉक डाउन (स्वबा कवूदद्ध जैसे उपायों का सहारा लिया। इन उपायों के कारण विश्व के सभी देशों में आर्थिक एवं व्यावसायिक गतिविधियां थम सी गई। परिवहन, पर्यटन एवं होटल उद्योग सर्वाधिक प्रभावित हुए हैं। ये उद्योग महामारी की समाप्ति के बाद भी जल्दी नहीं उबर पाएंगे। अंकटाड **(United Nations Conference on Trade & Development)** की

प्रोफेसर एवं डीन | अर्थशास्त्र विभाग
जनार्दनराय नागर, राजस्थान विद्यापीठ, (डीम्ड टू बी) विश्वविद्यालय

एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व अर्थव्यवस्था गंभीर सुस्ती की चपेट में आयेगी, जिससे सभी देश प्रभावित होंगे।

अंकटॉड के अनुसार बड़े घरेलू बाजार वाले देश जैसे भारत व चीन पर इस सुस्ती का प्रभाव कम हो सकता है। कई अन्य अनुमानों द्वारा भी विश्व अर्थव्यवस्था में एक तिहाई तक गिरावट का अनुमान लगाया गया है। इस महामारी से सबसे प्रभावित वर्ग गरीब तबका है जिसके रोजगार के अवसर लगभग समाप्त हो जाने से उसकी स्थिति दयनीय हो गई है। एक अनुमान के अनुसार भारत में करीब आठ करोड़ प्रवासी मजदूरों को शहरों में अपने रोजगार समाप्त होने के कारण अपने घरों को लौटना पड़ा है। महामारी ने वैश्वीकरण की गति को भी प्रभावित किया है। महामारी के समाप्त होने के बाद भी विभिन्न देश अपनी अर्थव्यवस्था को बनाने के लिए कई तरह के प्रतिबंध लगाने तथा संरक्षणवादी नीतियों को अपनाने का प्रयास करेंगे। भारत के प्रधानमंत्री ने भी मई, 2020 में भारत की अर्थव्यवस्था को "आत्मनिर्भर" बनाने पर जोर दिया है। उन्होंने आयातित वस्तुओं के स्थान पर स्थानीय वस्तुओं के उत्पादन व उपभोग पर जोर दिया है।

लॉक डाउन से आर्थिक गतिविधियां, कारखानों, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों, बाजारों एवं उद्योग धन्धों के बंद हो जाने से वाइट कॉलर ीपजम बवससंतद्ध तथा ब्लू कॉलर (ठसनम बवससंतद्ध दोनों ही प्रकार के कामगार प्रभावित हुए है। भारत में कुल कामगारों में से लगभग 92 प्रतिशत कामगार असंगठित क्षेत्र में कार्यरत हैं। लॉक डाउन का सर्वाधिक प्रतिकूल प्रभाव इन्हीं कामगारों पर पड़ा। अप्रैल, मई व जून से इनकी आय लगभग शून्य हो गई, जो कुछ बचतें उनके पास थीं वो इनके वापस घर लौटने की जुगाड़ में खर्च हो गई। इन कामगारों में तीन वर्ग के कामगार शामिल हैंः–

1- d|'ky Jfed– तकनीकी रूप से शिक्षित प्रशिक्षित, लिपिकीय कार्य करने वाले, तकनीशियन, मशीन, कम्प्यूटर ऑपरेटर व ड्राईवर आदि।

2- v)|d|'ky Jfed– मशीनों पर कार्य करने वाले हेल्पर, हलवाई, रेस्टोरेन्ट में कार्य करने वाले, राजमिस्त्री आदि

3- vd|'ky Jfed– निर्माण परियोजनाओं में कार्यरत दिहाड़ी मजदूर, रेहड़ी–ठेला वाले, पटरियों पर सामान बेचने वाले, रिक्शा चालक, कुली, सफाईकर्मी, घरों में काम करने वाले, ठेलों, बसों चौराहों पर सामान बेचकर गुजारा करने वाले लोडिंग, अनलोडिंग करने वाले, कृषि श्रमिक।

इनमें से अकुशल श्रमिक तो पहले से ही निर्धनता रेखा से नीचे का जीवनयापन कर रहे थे। अर्द्धकुशल कामगारों की स्थिति कुछ बेहतर थी, लेकिन उसे सम्मानजनक स्तर पर तो नहीं माना जा सकता है।

कोविड से बेरोजगारी की दर ग्रामीण क्षेत्रों में 26.69 प्रतिशत तथा शहरी क्षेत्रों में 29.22 प्रतिशत हो गई। प्रवासी श्रमिकों के शहरों से गांवों के पलायन से ग्रामीण क्षेत्रों में प्रच्छन बेरोजगारी में भारी उछाल आया है। कोविड–19 लॉकडाउन से पटरी से उतरी अर्थव्यवस्था में फिर से नई जान फूंकने के लिए घोषित विशेष पैकेज से जहां केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकारों के गैर उत्पादक व्ययों में भारी वृद्धि हो गई है। वहीं उत्पादक गतिविधियों के ठप्प हो जाने से कर राजस्व में भारी गिरावट दर्ज की गई है। समग्र रूप से कोविड–19 वैश्विक महामारी के अर्थव्यवस्था पर प्रभाव तात्कालिक रूप से एवं 2020–21 एवं 2021–22 की अवधि में निम्न

प्रकार के होंगें:

सार्वजनिक व्यय में भारी वृद्धि तथा कर राजस्व में कमी हो जाने से राजकोषीय घाटा बजट 2020–21 में अनुमानित जी.डी.पी. (ळक्व्द्ध का 3ण्5 प्रतिशत के स्तर पर बनाए रखनाा लगभग असंभव होगा। विशेषज्ञों के अनुसार इसमें 1.5 से 2.5 प्रतिशत तक की वृद्धि हो सकती है। 2019–20 के दौरान डॉलर मूल्य में भारत के निर्यातों में (–) 4.78 : तथा आयातों में (–) 9.12 : की वृद्धि दर्ज की गई हैं। चूंकि वैश्विक स्तर पर वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग में गिरावट का दौर है इसलिए 2020–21 के दौरान निर्यातों में वृद्धि तो नहीं ही होगी। घरेलू स्तर पर 2020–21 के दौरान किसी बहुत बड़े उछाल की संभावना नजर नहीं आती इसलिए आयातों में भी वृद्धि नहीं होगी। अन्तर्राष्ट्रीय तेल बाजार में कीमतों के निचले स्तर पर रहने की ही संभावना है इसलिए तेल आयात बिल अपेक्षाकृत कम ही रहेगा।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की एक रिपोर्ट के अनुसार कोविड–19 संक्रमण अलग–अलग देशों में वित्तीय संपोषणीयता को प्रतिकूल ढंग से प्रभावित कर रहा है जिसके कारण संकट की इस घड़ी में उठकर खडे होने की राष्ट्रों की क्षमता प्रभावित हो रही है। लॉकडाउन से कर राजस्व में गिरावट तथा राहत एवं पुनःर्निर्माण पैकेज से सार्वजनिक व्यय में वृद्धि के साथ वित्तीय दशाओं की स्थिति कमजोर होते जाने से सरकार, कॉर्पोरेट कम्पनियां तथा व्यक्तियों की वित्तीय संपोषणीयता पर भारी दबाव है।

कुटीर, सूक्ष्म, लघु एवं मंझोले उपक्रमों से लेकर बड़े कॉर्पोरेट घरानों/कम्पनियों तक सभी के बिक्री राजस्व में भारी कमी हुई है। जो 2020–21 में भी जारी रहेगी। पहले से ही बैंको के बकाया ऋणों के बोझ तले दबे व्यवसायों की ऋण, गैर निष्पादनीय आस्तियों में परिवर्तित होती जाएंगी। कुल मिलाकर कोविड–19 महामारी, नीची कॉर्पोरेट आय, बढ़ते ऋण पुनर्भुगतान दबावों से कम्पनियों की ऋण पुनर्भुगतान चूंके बढेगी। साथ ही रोजगार के अवसरों में कमी आयेगी। निवेशकों के विश्वास में भी कमी आने की संभावना रहेगी। अर्थव्यवस्था के वित्तीय संकट में फंस जाने की संभाव्यता बढ़ जायेगी।

भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर शशिकान्त दास ने (22 मई, 2020 को वर्ष 2020–21) की मौद्रिक नीति की समीक्षा करते हुए अर्थव्यवस्था के समक्ष जिन चुनौतियों का उल्लेख किया उनमें जैसेः–

- कोविड–19 महामारी एवं लॉकडाउन के कारण निजी उपभोग में भारी गिरावट आई।
- निवेश मांग में बड़े स्तर का ठहराव
- अर्थव्यवस्था में समग्र मांग में व्यापक कमी
- विद्युत उपभोग एवं पेट्रोलियम उत्पादों के उपभोग में कमी
- कोविड–19 महामारी ने सारे विश्व में वैश्विक अर्थव्यवस्था को तोड़कर रख दिया है। आर्थिक गतिविधियां लगभग ठप्प सी है।

राष्ट्रीय साँख्यिकीय कार्यालय द्वारा 29 मई, 2020 को राष्ट्रीय आय के वर्ष 2019–20 के अन्तिम अनुमान तथा चौथे त्रैमासिक अनुमान जारी किए। चालू वित्त वर्ष (2020–21) में मंदी की आशंका के बीच वित्त वर्ष 2019–20 में भारत की आर्थिक वृद्धि (4.2 ःद्ध 11 वर्षों के निचले स्तर पर आ गई है। लॉकडाउन के कारण वित्त वर्ष 2019–20 के अन्तिम तिमाही (जनवरी से मार्च) में निजी निवेश तथा विनिर्माण गतिविधियों पर भी व्यापक प्रभाव पड़ने से सकल घरेलू उत्पाद में विकास दर 3.0ः के निम्नतम स्तर पर है। वित्त वर्ष

2019–20 में विनिर्माण क्षेत्र के ळट। में भी मात्र 0.03ः की ही वृद्धि हुई है जो 2020–21 के लिए निराशाजनक वातावरण का संकेत करती है।

कोरोना संकट में अर्थव्यवस्था को लगे धक्के से पूरी तरह उबारने के लिए हमें नागरिकों के आवागमन को पहले जैसी स्थिति में लाना होगा। जब तक नागरिक सामान और सेवा की खरीद–बेच की प्रक्रिया पहले जैसी नहीं कर पाते या कार्य स्थल पर स्वतन्त्र रूप से नहीं जा पाते, आर्थिक बहाली अधूरी रहेगी। यद्यपि अब लगभग सभी कानूनी बाधाएँ हटा दी गई है तथापि वायरस के डर से नागरिकों ने अभी भी पूरी तरह आवागमन शुरू नहीं किया है। आज भी आर्थिक गतिविधियों में भी इस प्रक्रिया का प्रतिबिम्ब नजर आता है।

इस वित्तीय वर्ष में अप्रैल से जून की तिमाही के दौरान जब लॉकडाउन सबसे कड़ा था तो पिछले वित्तीय वर्ष की तुलना में देश का सकल घरेलू उत्पाद ;ळक्च्द्ध 24ः गिर गया। विश्व की अन्य अर्थव्यवस्थाओं में भी इसी तरह की भारी गिरावट रही। जैसे–जैसे आवागमन बढ़ा, अर्थव्यवस्था में गति पकड़ी। इसमें भारत में ळक्च् की गिरावट जुलाई से सितम्बर की तिमाही में 7. 5 पर सीमित रह गई। आवागमन की सुगमता का असर क्षेत्रवार जी.डी.पी. (ळक्च्द्ध पर भी देखने को मिलता है। अप्रैल–जून तिमाही के दौरान कृषि क्षेत्र के कामगारों के आवागमन पर न्यूनतम असर रहा। फलतः यह क्षेत्र सामान्यतः 3.4 : की दर से विकास में सफल रहा। जिन क्षेत्रों में आवागमन अधिक प्रभावित रहा, उनका प्रदर्शन उतना ही खराब रहा। निर्माण क्षेत्र में 50.3 : व्यापार, होटल, ट्रांसपोर्ट, संचार एवं प्रसारण से जुड़ी सेवाओं में 47:ए उत्पादन के क्षेत्र में 39.3ः तथा खनन में 23.3ः की गिरावट दर्ज की गई।

जुलाई से सितम्बर की तिमाही में भी क्षेत्रवार उत्पादन आवागमन की सुविधा के महत्व को दर्शाता है। कृषि क्षेत्र में एक बार फिर 3.4ः की वृद्धि हुई। लोगों के काम पर आने से अन्य क्षेत्रों में भी सुधार नजर आया। बिजली और अन्य उपयोगी सेवओं में पहली तिमाही में 7ः की गिरावट के मुकाबले दूसरी तिमाही में 4.4ः की बढ़ोतरी हुई। औद्योगिक उत्पादन में भी मामूली 0.6ः की वृद्धि हुई और निर्माण क्षेत्र की गिरावट भी 8.6ः रह गई। यहाँ तक की आवागमन की रोक से सर्वाधिक प्रभावित व्यापार, होटल, ट्रांसपोर्ट, संचार एवं प्रसारण सेवाओं से जुड़े क्षेत्रों में भी गिरावट कम होकर 15.6ः ही रह गई।

कोविड–19 की महामारी में भारतीय अर्थव्यवस्था को झकझोर कर रख दिया है। इसने कई नवीन विधाओं को जन्म दे दिया है जो अत्यन्त विध्वंसक साबित हुए है। मांग पक्ष एवं आपूर्ति पक्ष दोनों ही गंभीर चिंतनीय अवस्था में पहुंच गये हैं।

ekx i{k ij izHkko

एविएशन, हॉस्पीट्लटी और टूरिज्म सबसे ज्यादा प्रभावित क्षेत्र है। कोविड–19 का सर्वाधिक प्रभाव इन पर पड़ा है। लॉकडाउन के कारण शापिंग मॉल, सिनेमा हॉल, मल्टीप्लेक्स बंद पड़े हुए हैं। खुदरा क्षेत्र को देखें तो आवश्यक एवं मनोरंजन की वस्तुओं की खपत (उपभोग) में कमी देखी जा सकती है। आय के स्तर में गिरावट बेरोजगारी के बढ़ने के कारण से दिखाई पड़ रही है। दिहाड़ी कमाने वालों के रोजगार के अवसर जो तमजंपसए बवदेजतनबजपवदए जतंदेचवतजंजपवद ंदक मदजमतजंपदउमदज के क्षेत्र में होते थे, वो लगभग बंद से पड़े है। उपभोक्ता के बीच भय और दहशत के कारण कार्य स्थल भी बहुत प्रभावित हुए है। शिक्षण संस्थाएं, स्कूल कॉलेज एवं विश्वविद्यालय कोचिंग सेन्टर भी प्रभावित है। आज तक भी बच्चों के

अभिभावक अपने बच्चों को वहाँ भेजने को तैयार नहीं हैं। हाँ यह बात जरूर है कि कोविड–19 ने एक नया कार्य करने का ढंग जरूर ईजाद करवा दिया है। वर्क फ्रॉम होम ॅवता थ्तवउ भ्वउमद्ध, प्राईवेट फर्म, सरकारी संस्थानों, विश्वविद्यालय, स्कूल, कॉलेजों की कार्यशैली एवं कार्य पद्धति में आमूल–चूल परिवर्तन देखने को मिल रहा है, क्योंकि ये सभी अब वर्क फ्रॉम होम प्लेटफार्म ॅवता थ्तवउ भ्वउम च्संजवितउ द्ध्भ्द्ध से चल रहे हैं।

होटल, रेस्टोरेंट भी सर्वाधिक प्रभावित हुए हैं, क्योंकि अभी भी ये पूरी तरह से नहीं खुले हैं। केवल टेक अवे / होम डिलीवरी (जंम ूंलध्ीवउम कमसपअमतलद्ध की छूट प्राप्त है एवं सरकार द्वारा नित नयी गाईड लाईन जारी हो रही है। इसी तरह अवकाश यात्राएं, व्यापार यात्राएं, वर्कशॉप, सेमिनार, कान्फ्रेंस, सिम्पोसियम ॅवतोीवचए ैमउपदंतेए ब्वदमितमदबमए ैलउचवेपनउद्ध भी आज भी स्थगित हैं।

foÙkh; cktkj ij izHkko

कोविड–19 महामारी की विभीषिका ने वित्तीय बाजार को भी अपनी प्रभाव की चपेट में ले लिया हैं। इसके कारण शेयर बाजार के हालात नाजुक हुए जिसके कारण उपभोग का स्तर भी निम्नतम स्तर तक पहुंच गया। 12 मार्च, 2020 का दिन इतिहास का सबसे काला दिन साबित हुआ क्योंकि घरेलू इक्विटी बाजार में सबसे ज्यादा गिरावट देखी गई। ठैम् ैमदेमग में 2919 एवं छैम् छपजिल में 868 अंकों की गिरावट देखने को मिली। यह गिरावट आज भी उच्चावचन का शिकार है। 19 मार्च, 2020 को भारतीय शेयर बाजार अपने निचले स्तर पर पहुंच गया था। ठैम् ैमदेमग 581 अंकों की गिरावट के साथ 28,288 के स्तर पर, छैम् छपजिल 205 अंक गिकरकर 8236 स्तर पर बंद हुआ।

iwfrZ i{k ij izHkko

अब आपूर्ति मोर्चे पर ध्यान केन्द्रित करते हैं तो पाते है कि वस्तुतः चीन से कच्चे माल की आपूर्ति न हो पाने के कारण हमारे यहां के कारखानों को बंद करने की विवशता सामने आई जिससे विनिर्माण क्षेत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। यह कटु सत्य है कि कच्चे माल एवं अन्तिम उत्पाद हेतु हम चीन पर ही निर्भर रहते हैं। कच्चे माल की आपूर्ति ने इलेक्ट्रोनिक्स, ऑटोमोबाइल, केमिकल प्रोडक्ट और फार्मास्यूटिकल उद्योग को सर्वाधिक प्रभावित किया है। इस कोविड–19 महामारी के कारण कम्पनियों के व्यावसायिक भाव (इनेपदमे ेमदजपउमदजेद्धए विनिवेश आौर उत्पादन का क्रम ॅबीमकनसमद्ध भी बिखर सा गया है। एशिया, अमेरिका और यूरोप के कई देशों के साथ हमारे निर्यात पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। इससे यह भी तय है कि रोजगार का संकट बढ़ेगा और पर्यटन, शिक्षा, होटल व्यवसाय, परिवहन, ऑटोमोबाईल तथा रियल एस्टेट आदि क्षेत्रों पर विपरीत प्रभाव पड़ने की संभावना हैं।

vUrjk"Vªh; O;kikj ij izHkko

रत्न और आभूषण, सी फूड्स (समुद्री भोजन) पेट्रोकेमिकल्स आदि वस्तुओं से निपटने में भारतीय बाजार एक (परिवर्तक) ळंउम बींदहमत रहा है। खासतौर पर कोविड–19 ने चीन के निर्यात पर नकारात्मक प्रभाव डाला है। उदाहरण के लिए मछली पकड़ने के क्षेत्र में लगभग निर्यात से 1300 करोड़ रू. का नुकसान होने का अनुमान है। भारत अपने हीरे का 36ः चीन को निर्यात करता है। फरवरी, मार्च एवं अप्रैल के बीच चार प्रमुख व्यापार कार्यक्रमों (समझौतों) को रद्द करना पड़ा, जिसमें 8,000 से 10,000 करोड़ रू. का नुकसान हुआ।

भारत अपने पेट्रो पदार्थों का 34: चीन को निर्यात करता है। चीन को भी हमारे निर्यात प्रतिबंधों को झेलना पड़ा। चीन में विनिर्माण मंदी के कारण विश्वव्यापार पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

कुछ महत्वपूर्ण पहलू जो कोविड–19 की देन कही जा सकती है–

- **Digital and Internet** अर्थ व्यवस्था का मजबूत बनना।
- **FMCG and Retail Sector** में तेजी देखने को मिल रही है।
- सामान खरीदने बेचने की प्रक्रिया में मॉल्स एवं डिजिटल प्लेटफॉर्म के रूप में विकसित हो रहे है।
- रसायनों की बिक्री करने वाली फर्मों के द्वारा सेनिटाईजर, पीपीई किट, एन–95 मास्क, **insecticides,** एवं अन्य दवाईयों की मांग में तेजी देखी जा सकती है।

lkekftd ,oa lkLdfrd izHkko

यह महामारी एक तरह से प्रकृति का भी प्रकोप है। अतः लोगों की जीवन शैली में पर्यावरण के साथ सामंजस्य की प्रवृत्ति दिखाई देगी। समाज में सामाजिक मेलजोल पर भी इसका प्रभाव पडेगा। भोजन एवं साफ–सफाई के प्रति लोगों में एक नई जागरूकता की शुरूआत हुई है। जो भविष्य में भी व्यक्तियों की जीवनशैली का अंग बनी रहेगी। लॉकडाउन तथा सामाजिक दूरी के कारण व्यक्तियों में मानसिक विकास एवं तनाव की चुनौती भी बढ़ गई हैं। अब घर पर रहना, घर का खाना, घर पर ही पढ़ाई, कामकाज और पूजा–पाठ आदि करने की रीति पर काम हो रहा है। कोविड–19 के कारण डिजीटल इन्फ्रास्ट्रक्चर में मजबूती देखने को मिल रही है। रोबोट्स में कोरोना संक्रमण का खतरा न होने के कारण इनके प्रयोग में वृद्धि संभावित है। विभिन्न कार्यों एवं समस्याओं के समाधान हेतु कृत्रिम मेघा का उपयोग एवं स्वीकार्यता भविष्य में बढ़ेगी। कोविड–19 के कारण सार्वजनिक स्वच्छता के बेहतर होने की आशा है। इसके साथ ही हम कई बुरी आदतों से छुटकारा पा सकते हैं। सोशल मीडिया में भी सकारात्मक बदलाव देखने को मिल सकते हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में नये अनुसंधान होने के साथ ही टेलीमेडिसिन पद्वति प्रचलन में आयेगी। बड़े–बड़े आयोजनों में भी कमी आने की संभावना है। शिक्षा और चिकित्सा क्षेत्र में सुधार आने के साथ–साथ सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगें। कोविड–19 संभवतः एक ऐसी दुनिया बनायेगा, जो कम खुली, कम समृद्ध और कम स्वतन्त्र हो सकती है। कोरोना वायरस ने विश्व को अपर्याप्त योजना और अक्षम नेतृत्व के संकट का भी ध्यान दिलाया है। लेकिन इसकी वजह से नागरिक स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होंगें तथा प्राकृतिक चिकित्सा पद्वति, शाकाहारी, योग, संयमित जीवन, आयुर्वेद, पर्यावरण, शारीरिक दूरी, व्यक्तिगत स्वच्छता तथा सुरक्षात्मक उपायों का प्रयोग आदि तथ्य दैनिक दिनचर्या के प्रमुख अंग होंगें।

jktuhfrd izHkko

कोविड वैसे तो एक स्वास्थ्य सम्बंधी समस्या है लेकिन इसके राजनैतिक प्रभाव भी अत्यन्त उल्लेखनीय है। इसने देशों के आपसी सम्बंधों तथा वैश्विक संस्थाओं जैसे विश्व स्वास्थ्य संगठन की भूमिका को भी प्रभावित किया है।

अमेरिका व यूरोप के देशों ने चीन पर महामारी से सम्बंधित तथ्यों को छिपाने का आरोप लगाया है। इन देशों का मानना है कि बीमारी की शुरूआत चीन में जनवरी में न होकर उसके पहले हुई है लेकिन चीन ने इस तथ्य को छिपाया है। अगर समय रहते चीन इसकी जानकारी दुनिया के देशों को दे देता तो दुनिया में इतनी तबाही

नहीं होती। अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रम्प चीन पर आरोप लगाने में मुखर रहे है। उन्होने यहां तक कहा है कि कोविड महामारी का विषाणु वुहान के मछली बाजार से नहीं वरन् वुहान स्थित वायरस की शोध प्रयोगशाला से बाहर आया है, जिसे चीन छिपा रहा है। इसी बीच आस्ट्रेलिया ने उस विषाणु के आरम्भिक संक्रमण की जाँच की मांग उठाई, जिसे चीन ने खारिज कर दिया। उल्टे चीन ने आस्ट्रेलिया पर कतिपय व्यापारिक प्रतिबंध भी लगा दिए है। चीन ने आस्ट्रेलिया से मांस के आयात पर रोक लगा दी है। चीन ने इन सभी आरोपों का खण्डन किया और उसने उल्टे अमेरिका पर विषाणु फैलाने का आरोप लगाया है। चीन का कहना है कि कोविड का विषाणु अमेरिका के सैनिकों द्वारा चीन में उस समय फैलाया गया जब वे अक्टूबर 2019 में मैक मिलिटरी खेलों में भाग लेने के लिए वुहान आये थे। इन आरोप–प्रत्यारोपों के कारण चीन व अमेरिका के सम्बंधों में तनाव आ गया है।

कोविड महामारी के खराब प्रबन्धन के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन पर भी आरोप लगाए गए हैं। अमेरिका ने कहा कि यह संगठन चीन के प्रति अनावश्यक झुका हुआ है। इसने कोविड को महामारी घोषित करने में अनावश्यक देर लगाई। इस घटना से ॅभ् की प्रतिष्ठा पर प्रतिकूल असर हुआ है। विदेशी व्यापार के क्षेत्र में पहले से ही एक दूसरे के सामने खड़े अमेरिका तथा चीन के बीच शीत युद्ध अब चरम पर है।

भारत में कोविड–19 महामारी को फैलने से रोकने के लिए विभिन्न राज्यों द्वारा अपनी–अपनी सीमाओं को सील कर दिए जाने से लगभग सभी राज्यों का व्यवहार भारत के भीतर पृथक–पृथक राष्ट्र बन जाने जैसा हो गया। अनेक राज्यों ने अन्य राज्यों से आने वाली प्रवासी श्रमिकों को अपनी सीमा में घुसने नहीं दिया। यही स्थिमि जनपदों, शहरों, कस्बों एवं गाँवों में उत्पन्न हुई।

fu"d"k

भारत ने बहुत ही बहादुरी से वैश्विक महामारी का सामना किया। विश्व ने भारत के इस राष्ट्रीय चरित्र एवं ताकत/हिम्मत एवं साहस को बहुत करीब से देखा है। महामारी में भारतीयों में जिम्मेदारी की भावना, संवेदना पूर्ण व्यवहार, सेवा, राष्ट्रीय एकता एवं नवाचार की भावना को आसानी से देखा जा सकता है। देश की जनता ने कोरोना वायरस से एवं आर्थिक स्थिरता पक्ष पर बहुत ही हिम्मत से इस महामारी से बचने के हर संभव प्रयास किये हैं। आज भारत मे बदलाव की एक लहर है, जो भारत को आत्मनिर्भरता की तरफ बढ़ा रहा है और जिसमें भारतीयों की व्यावसायिकता एवं कुशलताओं का प्रयोग कर भारत को वैश्विक मैन्यूफेक्चरिंग पावर हाउस बनाने का प्रयास किया जा रहा है। आज भारत निवेशकों को जनसंख्या ;क्मउवहतंचीलद्ध, जनतंत्र ;क्मउवबतंबलद्धए मांग ;क्मउंदकद्ध एवं विविधता ;क्पअमतेपजलद्ध की वजह से आकर्षित कर रहा है। भारतीयों के संदर्भ में निम्न पंक्तियाँ सही चरितार्थ होती है:

"लहरों से डरकर नैया पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती"

वायरस से निपटने के प्रति लोगों में बढ़ते आत्मविश्वास को ध्यान में रखते हुए सरकार आर्थिक प्रगति की दर को बढ़ाने के लिए निम्न कदम उठा सकती है–

- **GDP** में अरबों डालर का नुकसान हो रहा है इसलिए वैक्सीन लगाने में तेजी दिखानी चाहिए ताकि लोगों का आवागमन पहले जैसी स्थिति में जल्द आ

सकें।

- वायरस के खिलाफ लोगों का आत्मविश्वास बढ़ने से वित्तीय प्रोत्साहन के प्रभावी मांग और प्रभावी मांग के उत्पादन में बदलने की श्रेष्ठ संभावना है। यदि **GDP** का **1.2%** हिस्सा वित्तीय प्रोत्साहन में लगा दें तो कोरोना के पहले की स्थिति में अर्थव्यवस्था को आने और 7ः से अधिक वृद्धि दर पाने में मदद मिलेगी। प्रोत्साहन के लिए सरकार जो वित्तीय कर्ज लेगी उससे कहीं अधिक तीव्र आर्थिक प्रगति से वसूल कर सकेगी।
- ये अवश्यसंभावी है कि पिछली तिमाही के दौरान राजस्व प्रवाह में आई कमी से कई उद्यमियों को दिवालिया घोषित करना पड़ेगा। इससे बैंक लोन के डिफाल्टर एवं छच। बढ़ेंगें। याद रहे कि कोरोना से पहले भी सरकार द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के पुनःपूंजीकरण मे देरी से उत्पन्न संकट से अर्थव्यवस्था को झटका लगा था यह गलती दोहराना हानिकारक होगा।

लेकिन अभी भी कोविड के चलते कठिन आर्थिक चुनौतियों के बीच इन चमकीली संभावनाओं को साकार करने के लिए भारी राजनीतिक प्रयासों की आवश्यकता होगी। आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत घोषित किए गए विभिन्न आर्थिक पैकेजों के क्रियान्वयन पर पूरा ध्यान देना होगा। विकास को गति देने के लिए सरकार द्वारा स्वास्थ्य, श्रम, भूमि कारोबार, विदेशी निवेश, कौशल, बैकिंग और वित्तीय क्षेत्रों में घोषित किए गए सुधारों को कार्यान्वयन की डगर पर तेजी से आगे बढ़ाना होगा।

देश के सर्वांगीण विकास के लिए एक नया आर्थिक मार्ग बनाना होगा, जिसमें प्रति व्यक्ति आय से अधिक महत्व सभी नागरिकों की संतुष्टि एवं प्रसन्नता को दिया जाए, इसके लिए सबसे जरूरी है कि कृषि व इससे जुड़ी अन्य आर्थिक गतिविधियों, पशुपालन, स्वरोजगार, कुटीर व लघु उद्योगों एवं सेवा क्षेत्र को भरपूर सहयोग व संरक्षण दिया जाए। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को ताकत देने के लिए हस्तशिल्प विकास बड़ा क्षेत्र है। कृषि उत्पाद प्रसंस्करण व हस्तशिल्प से जुड़े कुटीर व लघु उद्योगों को ग्रामीण क्षेत्र में स्थापित करने पर विशेष प्रोत्साहन देने से ग्रामीणों का पलायन रूकेगा और उन्हें घर के आसपास ही रोजगार मिल सकेगा। पलायन को रोकने के लिए गाँव और कस्बों को शहरी सुविधाओं से लैस करना होगा। भारत कोविड–19 महामारी से उबरते हुए शीघ्र ही विकास पथ पर अग्रसर होगा तथा समस्त विश्व का मार्गदर्शन करने में सक्षम होगा।

वास्तव में कोविड–19 महामारी एक युगान्तकारी घटना है। अभी भी इस महामारी का प्रकोप जारी है। यद्यपि इसका टीका आ गया है लेकिन फिर भी इसका अन्त अनिश्चित है। इसके अब तक के घटनाक्रम से स्पष्ट है कि इसने मानव समाज के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया है। आश्चर्यजनक रूप से कोविड ने विश्व के धनी और विकसित देशों को अधिक प्रभावित किया है। इसका सबसे कम प्रभाव अफ्रीका के देशों में देखने में आया है। इसने विश्व अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रभाव डालने के साथ–साथ वैश्वीकरण की प्रक्रिया को भी प्रभावित किया है। संकट बहुआयामी है। यह कब समाप्त होगा यह कहा नहीं जा सकता, लेकिन इतना तो तय है कि मानव समाज को कोविड–19 महामारी के साथ ही जीना सीखना होगा।